



Mr.

30 Aug 2025

09:59 PM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119301101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 30/08/2025
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 21:59:00 घंटे
इष्ट _____: 40:01:58 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 21:37:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:38 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:14:20 घंटे
सूर्योदय _____: 05:58:12 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:44:40 घंटे
दिनमान _____: 12:46:28 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 13:20:36 सिंह
लग्न के अंश _____: 21:06:17 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अनुराधा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: वैधृति
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: नी-निष्ठा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	भाद्रपद	8
पंजाबी	संवत : 2082	भाद्रपद	15
बंगाली	सन् : 1432	भाद्रपद	13
तमिल	संवत : 2082	आवनी	14
केरल	कोल्लम : 1201	चिंगम	14
नेपाली	संवत : 2082	भाद्रपद	14
चैत्रादि	संवत : 2082	भाद्रपद	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2082	भाद्रपद	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
 तिथि समाप्ति काल _____ : 22:46:52
 जन्म तिथि _____ : 7
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : विशाखा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 14:37:20 घंटे
 जन्म योग _____ : अनुराधा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : ऐन्द्र
 योग समाप्ति काल _____ : 15:09:28 घंटे
 जन्म योग _____ : वैधृति
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 09:35:23 घंटे
 जन्म करण _____ : वणिज
 भयात _____ : 18:24:12
 भभोग _____ : 67:04:15
 भोग्य दशा काल _____ : शनि 13 वर्ष 9 मा 19 दि

घात चक्र

मास _____ : आश्विन
 तिथि _____ : 1-6-11
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : रेवती
 योग _____ : व्यतिपात
 करण _____ : गर
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : गरुड़
 लग्न _____ : वृश्चिक
 सूर्य _____ : मकर
 चन्द्र _____ : धनु
 मंगल _____ : कुम्भ
 बुध _____ : वृश्चिक
 गुरु _____ : मीन
 शुक्र _____ : मेष
 शनि _____ : कर्क
 राहु _____ : वृष

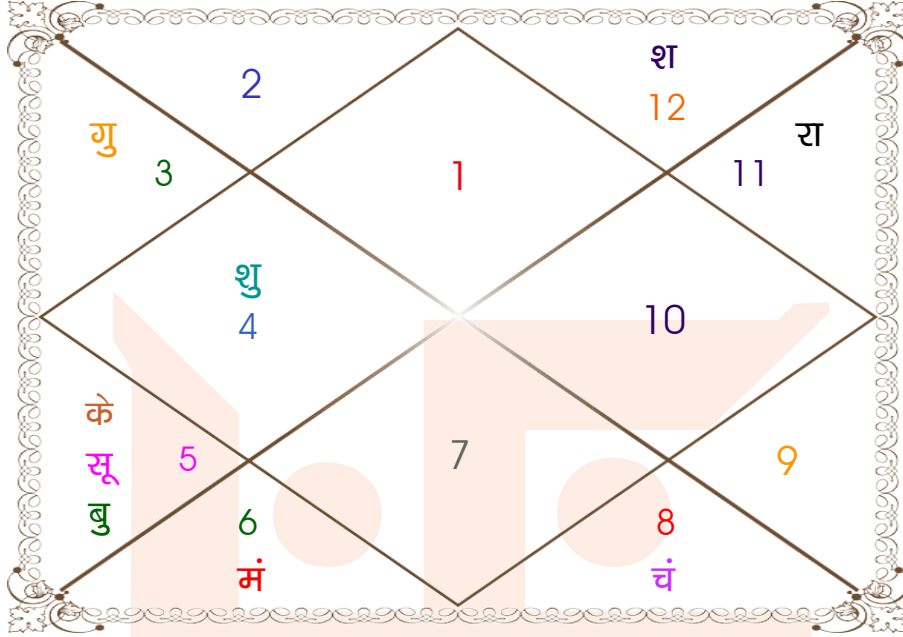


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

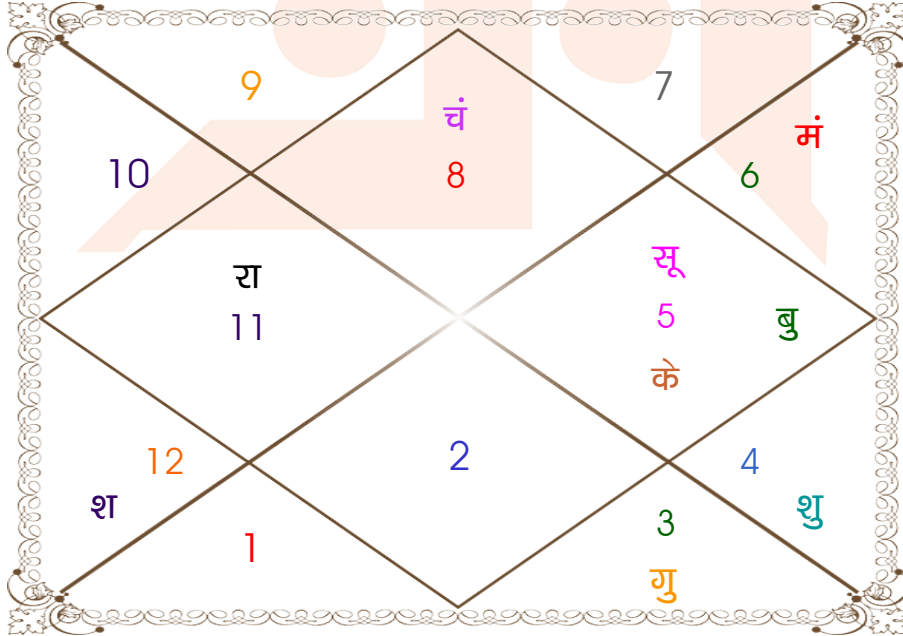


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श	ल		गु
रा			शु
			के सू बु
	चं		मं

लग्न कुंडली

	ल	श
गु		रा
शु		
बु के	सू मं	चं

विंशोत्तरी
शनि 13वर्ष 9मा 19दि
शनि

30/08/2025

21/06/2140

शनि	20/06/2039
बुध	20/06/2056
केतु	20/06/2063
शुक्र	20/06/2083
सूर्य	20/06/2089
चन्द्र	20/06/2099
मंगल	21/06/2106
राहु	21/06/2124
गुरु	21/06/2140

योगिनी
भ्रामरी 2वर्ष 10मा 26दि
भ्रामरी

30/08/2025

27/07/2028

	00/00/0000
	30/08/2025
उल्का	28/03/2026
सिद्धा	06/01/2027
संकटा	26/11/2027
मंगला	06/01/2028
पिंगला	27/03/2028
धान्या	27/07/2028



FUTUREPOINT
Astro Solutions



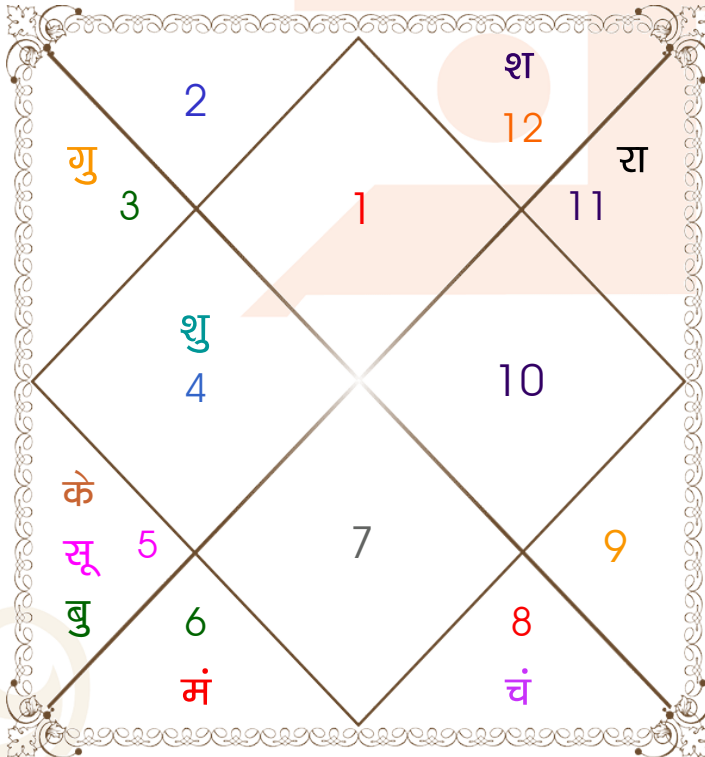
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	21:06:17	438:38:39	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	---
सूर्य			सिंह	13:20:36	00:58:01	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मूलत्रिकोण
चंद्र			वृश्चि	06:58:46	11:54:00	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	नीच राशि
मंगल			कन्या	20:50:42	00:38:53	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
बुध			सिंह	00:23:54	01:49:56	मघा	1	10	सूर्य	केतु	केतु	मित्र राशि
गुरु			मिथु	23:25:07	00:10:53	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	11:45:59	01:11:57	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	चंद्र	शत्रु राशि
शनि	व		मीन	05:53:50	00:04:06	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
राहु			कुंभ	24:10:54	00:00:27	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	मित्र राशि
केतु			सिंह	24:10:54	00:00:27	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	07:13:45	00:00:20	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	---
नेप	व		मीन	07:10:39	00:01:29	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो	व		मक	07:34:57	00:01:05	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			मक	07:08:05	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	केतु	--

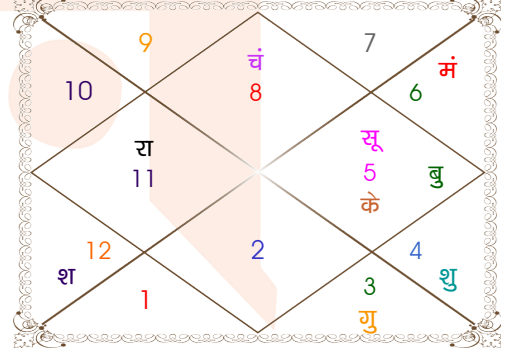
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:00

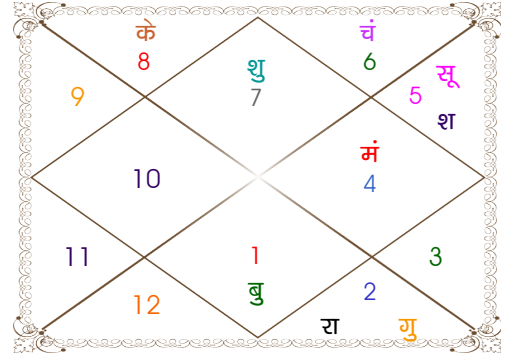
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 03:46:35	मेष 21:06:17
2	वृष 03:46:35	वृष 16:26:53
3	वृष 29:07:11	मिथुन 11:47:29
4	मिथुन 24:27:47	कर्क 07:08:05
5	कर्क 24:27:47	सिंह 11:47:29
6	सिंह 29:07:11	कन्या 16:26:53
7	तुला 03:46:35	तुला 21:06:17
8	वृश्चिक 03:46:35	वृश्चिक 16:26:53
9	वृश्चिक 29:07:11	धनु 11:47:29
10	धनु 24:27:47	मकर 07:08:05
11	मकर 24:27:47	कुम्भ 11:47:29
12	कुम्भ 29:07:11	मीन 16:26:53

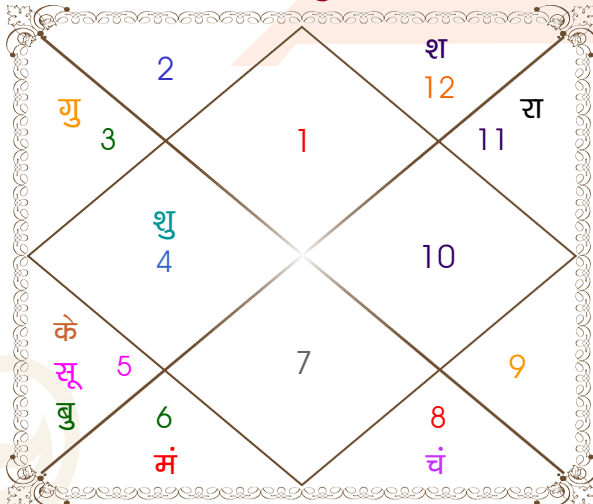
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	21:06:17
2	वृष	19:26:33
3	मिथुन	13:13:38
4	कर्क	07:08:05
5	सिंह	05:04:43
6	कन्या	10:25:21
7	तुला	21:06:17
8	वृश्चिक	19:26:33
9	धनु	13:13:38
10	मकर	07:08:05
11	कुम्भ	05:04:43
12	मीन	10:25:21

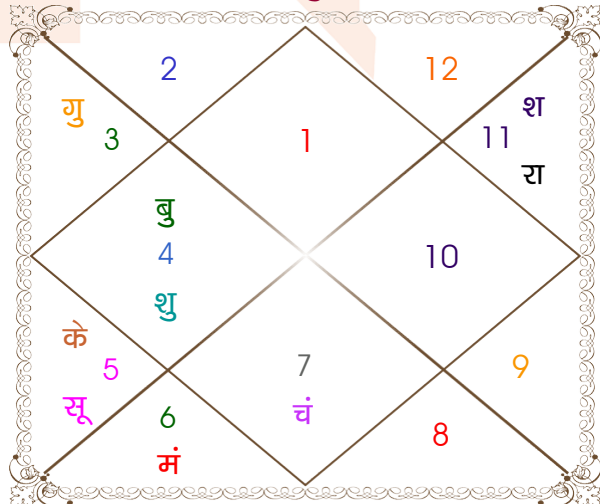
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 13 वर्ष 9 मास 19 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
30/08/2025	20/06/2039	20/06/2056	20/06/2063	20/06/2083
20/06/2039	20/06/2056	20/06/2063	20/06/2083	20/06/2089
30/08/2025	बुध 16/11/2041	केतु 16/11/2056	शुक्र 20/10/2066	सूर्य 08/10/2083
बुध 03/03/2026	केतु 13/11/2042	शुक्र 16/01/2058	सूर्य 20/10/2067	चंद्र 08/04/2084
केतु 11/04/2027	शुक्र 13/09/2045	सूर्य 24/05/2058	चंद्र 20/06/2069	मंगल 13/08/2084
शुक्र 11/06/2030	सूर्य 21/07/2046	चंद्र 23/12/2058	मंगल 20/08/2070	राहु 08/07/2085
सूर्य 24/05/2031	चंद्र 20/12/2047	मंगल 21/05/2059	राहु 20/08/2073	गुरु 26/04/2086
चंद्र 22/12/2032	मंगल 16/12/2048	राहु 07/06/2060	गुरु 20/04/2076	शनि 08/04/2087
मंगल 31/01/2034	राहु 06/07/2051	गुरु 14/05/2061	शनि 20/06/2079	बुध 13/02/2088
राहु 07/12/2036	गुरु 10/10/2053	शनि 23/06/2062	बुध 20/04/2082	केतु 20/06/2088
गुरु 20/06/2039	शनि 20/06/2056	बुध 20/06/2063	केतु 20/06/2083	शुक्र 20/06/2089
चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
20/06/2089	20/06/2099	21/06/2106	21/06/2124	21/06/2140
20/06/2099	21/06/2106	21/06/2124	21/06/2140	00/00/0000
चंद्र 20/04/2090	मंगल 17/11/2099	राहु 03/03/2109	गुरु 09/08/2126	शनि 24/06/2143
मंगल 19/11/2090	राहु 05/12/2100	गुरु 28/07/2111	शनि 19/02/2129	बुध 31/08/2145
राहु 20/05/2092	गुरु 11/11/2101	शनि 03/06/2114	बुध 28/05/2131	00/00/0000
गुरु 19/09/2093	शनि 21/12/2102	बुध 20/12/2116	केतु 03/05/2132	00/00/0000
शनि 20/04/2095	बुध 18/12/2103	केतु 08/01/2118	शुक्र 02/01/2135	00/00/0000
बुध 19/09/2096	केतु 15/05/2104	शुक्र 08/01/2121	सूर्य 21/10/2135	00/00/0000
केतु 20/04/2097	शुक्र 15/07/2105	सूर्य 02/12/2121	चंद्र 19/02/2137	00/00/0000
शुक्र 20/12/2098	सूर्य 20/11/2105	चंद्र 03/06/2123	मंगल 26/01/2138	00/00/0000
सूर्य 20/06/2099	चंद्र 21/06/2106	मंगल 21/06/2124	राहु 21/06/2140	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 13 वर्ष 9 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 30/08/2025 03/03/2026	शनि - केतु 03/03/2026 11/04/2027	शनि - शुक्र 11/04/2027 11/06/2030	शनि - सूर्य 11/06/2030 24/05/2031	शनि - चंद्र 24/05/2031 22/12/2032
00/00/0000	केतु 26/03/2026	शुक्र 21/10/2027	सूर्य 28/06/2030	चंद्र 11/07/2031
00/00/0000	शुक्र 02/06/2026	सूर्य 18/12/2027	चंद्र 27/07/2030	मंगल 14/08/2031
00/00/0000	सूर्य 22/06/2026	चंद्र 23/03/2028	मंगल 16/08/2030	राहु 09/11/2031
00/00/0000	चंद्र 26/07/2026	मंगल 30/05/2028	राहु 08/10/2030	गुरु 25/01/2032
00/00/0000	मंगल 18/08/2026	राहु 19/11/2028	गुरु 23/11/2030	शनि 25/04/2032
00/00/0000	राहु 18/10/2026	गुरु 23/04/2029	शनि 17/01/2031	बुध 16/07/2032
30/08/2025	गुरु 11/12/2026	शनि 23/10/2029	बुध 07/03/2031	केतु 19/08/2032
गुरु 28/09/2025	शनि 13/02/2027	बुध 05/04/2030	केतु 27/03/2031	शुक्र 23/11/2032
शनि 03/03/2026	बुध 11/04/2027	केतु 11/06/2030	शुक्र 24/05/2031	सूर्य 22/12/2032
शनि - मंगल 22/12/2032 31/01/2034	शनि - राहु 31/01/2034 07/12/2036	शनि - गुरु 07/12/2036 20/06/2039	बुध - बुध 20/06/2039 16/11/2041	बुध - केतु 16/11/2041 13/11/2042
मंगल 15/01/2033	राहु 06/07/2034	गुरु 09/04/2037	बुध 23/10/2039	केतु 07/12/2041
राहु 17/03/2033	गुरु 22/11/2034	शनि 03/09/2037	केतु 13/12/2039	शुक्र 06/02/2042
गुरु 10/05/2033	शनि 06/05/2035	बुध 12/01/2038	शुक्र 08/05/2040	सूर्य 24/02/2042
शनि 13/07/2033	बुध 30/09/2035	केतु 07/03/2038	सूर्य 21/06/2040	चंद्र 26/03/2042
बुध 08/09/2033	केतु 30/11/2035	शुक्र 08/08/2038	चंद्र 02/09/2040	मंगल 16/04/2042
केतु 02/10/2033	शुक्र 22/05/2036	सूर्य 23/09/2038	मंगल 23/10/2040	राहु 09/06/2042
शुक्र 08/12/2033	सूर्य 13/07/2036	चंद्र 10/12/2038	राहु 04/03/2041	गुरु 28/07/2042
सूर्य 28/12/2033	चंद्र 07/10/2036	मंगल 02/02/2039	गुरु 30/06/2041	शनि 23/09/2042
चंद्र 31/01/2034	मंगल 07/12/2036	राहु 20/06/2039	शनि 16/11/2041	बुध 13/11/2042
बुध - शुक्र 13/11/2042 13/09/2045	बुध - सूर्य 13/09/2045 21/07/2046	बुध - चंद्र 21/07/2046 20/12/2047	बुध - मंगल 20/12/2047 16/12/2048	बुध - राहु 16/12/2048 06/07/2051
शुक्र 05/05/2043	सूर्य 29/09/2045	चंद्र 02/09/2046	मंगल 10/01/2048	राहु 05/05/2049
सूर्य 25/06/2043	चंद्र 24/10/2045	मंगल 02/10/2046	राहु 04/03/2048	गुरु 06/09/2049
चंद्र 20/09/2043	मंगल 12/11/2045	राहु 18/12/2046	गुरु 22/04/2048	शनि 01/02/2050
मंगल 19/11/2043	राहु 28/12/2045	गुरु 25/02/2047	शनि 18/06/2048	बुध 13/06/2050
राहु 22/04/2044	गुरु 08/02/2046	शनि 18/05/2047	बुध 08/08/2048	केतु 06/08/2050
गुरु 07/09/2044	शनि 29/03/2046	बुध 31/07/2047	केतु 30/08/2048	शुक्र 08/01/2051
शनि 18/02/2045	बुध 12/05/2046	केतु 30/08/2047	शुक्र 29/10/2048	सूर्य 24/02/2051
बुध 15/07/2045	केतु 30/05/2046	शुक्र 24/11/2047	सूर्य 16/11/2048	चंद्र 12/05/2051
केतु 13/09/2045	शुक्र 21/07/2046	सूर्य 20/12/2047	चंद्र 16/12/2048	मंगल 06/07/2051

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 2
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

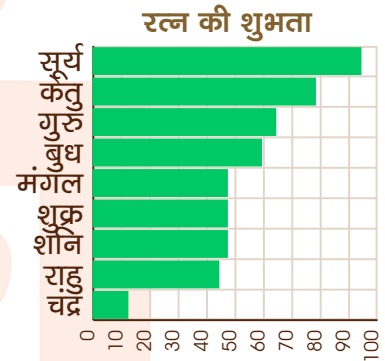


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	94%	सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	78%	सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	64%	पराक्रम, भाग्योदय, कम खर्च
पन्ना	बुध	59%	सन्तति सुख, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
मूंगा	मंगल	47%	शत्रु व रोग, रोग, दुर्घटना
हीरा	शुक्र	47%	ग्रह कलेश, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट
नीलम	शनि	47%	व्यय, व्यावसायिक हानि, हानि
गोमेद	राहु	44%	हानि, व्यय
मोती	चंद्र	12%	दुर्घटना, ग्रह कलेश



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	20/06/2039	82%	0%	22%	66%	64%	55%	61%	53%	66%
बुध	20/06/2056	100%	0%	47%	72%	64%	55%	47%	44%	78%
केतु	20/06/2063	82%	0%	55%	59%	64%	55%	22%	19%	91%
शुक्र	20/06/2083	82%	0%	47%	66%	64%	61%	55%	53%	84%
सूर्य	20/06/2089	100%	25%	55%	59%	70%	22%	22%	19%	66%
चंद्र	20/06/2099	100%	38%	47%	66%	64%	47%	47%	19%	66%
मंगल	21/06/2106	100%	25%	61%	44%	70%	47%	47%	19%	84%
राहु	21/06/2124	82%	0%	22%	59%	64%	55%	55%	59%	66%
गुरु	21/06/2140	100%	25%	55%	44%	77%	22%	47%	44%	78%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/02/2111-02/05/2113	22/09/2113-26/01/2114	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

पराक्रम
दम्पति
दुर्घटना
भाग्योदय
धनार्जन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। यह भाव शत्रु रोग तथा ऋण आदि का प्रतिनिधित्व करने वाला भाव है। अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी महिला होंगी तथा शत्रु या प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा एवं सामान्यतया आप स्वस्थता की ही अनुभूति करेंगी। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को सम्पन्न करने में रुचिशील रहेंगी। अतः आप (या कार्यरत न होने पर आपके पति) पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत हो सकती हैं। जीवन में ऋण आदि लेने की आपको कम ही आवश्यकता पड़ेगी तथा यदि लेंगी भी तो वापस करने में विशेष कठिनाई नहीं होगी जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगी। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यकलापों में आपकी अल्प मात्रा में ही रुचि रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कार्य करने पर अधिक विश्वास करेंगी। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्यबल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कर्म करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा तथा जीवन में शुभाशुभ दोनों प्रकार के व्ययों को करने में तत्पर रहेगी। यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इनको दूर करने में आप समर्थ रहेंगी साथ ही दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ होंगी। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने समस्त कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगी तथा परिवार का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगी। जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। अतः प्रसन्नता पूर्वक आप अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये

पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विवास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी

संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझे जाएंगे।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मि, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(30/08/2025 - 20/06/2039)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 30/08/2025 को आरम्भ और 20/06/2039 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 12वें भाव में स्थित है। यह एक खतरनाक ग्रह है। यह लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है। जतक के धैर्य की परीक्षा लेना इसकी प्रवृत्ति होती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 12वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि-द्वितीय, षष्ठम तथा नवम भाव पर है और यह उनके कार्यों को प्रभावित करता है। 12वां भाव, जिसमें यह ग्रह स्थित है, क्षति और बाधा, फिजूलखर्च, उदासी और चाकरी, दान, पुण्य, परिवार से अलगाव, कंजूसी और दुर्भाग्य, कार वास, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, अपकीर्ति, अपयश, बारीं आँख, शयन-सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

12वें भाव दुर्भाग्य के भाव में स्थित शनि के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

धन-सम्पत्ति :

12वें भाव में स्थित महादशा के स्वामी शनि के कारण आपको इस दशा के दौरान बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु, चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर भी मिलेंगे। आप विदेश में अपना भाग्य आजमा सकते हैं, किन्तु आपको अनेक बाधाओं के कारण सफलता नहीं मिलेगी।

व्यवसाय :

आप भ्रमणशील हैं और आपके जीवन में अनेक परिवर्तन आएंगे इसलिए आपके व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव आएंगे और आपकी हानि होगी। दिमागी स्तर पर आप सतर्क नहीं रहेंगे और सुस्त दिमाग होने के कारण आपके विभिन्न कार्यों में धन की हानि होगी। आप धार्मिक कार्यों पर अत्यधिक धन खर्च करेंगे। आप कृषि कार्य भी कर सकते हैं।

पारिवारिक कार्य :

आपके पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। असन्तोष तथा बिखराव के कारण आपका पारिवारिक जीवन असन्तुलित हो सकता है जिससे आपका जीवन कष्टमय हो जाएगा। आपकी पत्नी आपकी सहयोगी हो सकती हैं, पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जा सकती है कि आपको परिवार से दूर जाना पड़े जिसके फलस्वरूप आप परिवार से अलग भी हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा की दृष्टि से यह दशा बहुत अनुकूल नहीं है।

अंतर्दशा :- शनि - शनि
(30/08/2025 - 30/08/2025)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/08/2025 को प्रारंभ होकर 20/06/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 30/08/2025 को प्रारंभ होकर 30/08/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। इसे यद्यपि अशुभ समझा जाता है, परंतु यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभ फल में देरी तो करता है, परंतु फल मिलता अवश्य है। द्वादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 2, 6, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको संयम और धैर्य से काम करना होगा क्योंकि शनि आपकी परीक्षा ले सकता है। व्यापार में धनहानि संभव है। आलस्य की भावना रह सकती है; शत्रु बढ़ सकते हैं। गुपचुप पापकर्म में लिप्त हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में, सोने की अंगूठी में नीलम, शनिवार के दिन, रात्रिशयन से पूर्व, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर, प्रार्थना के उपरांत धारण करें।

अंतर्दशा :- शनि - बुध
(30/08/2025 - 03/03/2026)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 30/08/2025 को प्रारंभ होकर 20/06/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 30/08/2025 को प्रारंभ होकर 03/03/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। बुध शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

बुध बुद्धि का कारक है। इस अवधि में आपकी बुद्धिमत्ता और ज्ञान उत्तम होंगे। उच्च अधिकारियों के सलाहकार बन सकते हैं। प्रसन्नचित्त रहेंगे। विषय-वासना में अत्यधिक रुचि हानिकारक हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंतर्दशा :- शनि - केतु
(03/03/2026 - 11/04/2027)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/08/2025 को प्रारंभ होकर 20/06/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 03/03/2026 को प्रारंभ होकर 11/04/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म में रुचि हो सकती है, उदर रोग हो सकता है। कुछ विचित्र भावनात्मक अनुभव हो सकते हैं। भावनात्मक सुदृढ़ता के लिए हर कदम पर सावधानी बरतना श्रेयस्कर रहेगा। निकट संबंधियों के लिए आपकी भावनाएं असामान्य हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान जी की उपासना करें। मंगलवार और शनिवार को उपवास रखें। उपवास के बाद हनुमान जी को मिठाई अर्पित करें। उपवास मीठी वस्तु से ही तोड़ें। उस दिन नमक ग्रहण न करें।

अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(11/04/2027 - 11/06/2030)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/08/2025 को प्रारंभ होकर 20/06/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 11/04/2027 को प्रारंभ होकर 11/06/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके माता से उत्तम संबंध होंगे, बहुत से मित्र होंगे। परिवार में आपका मन लगेगा, स्वभाव शिष्ट होगा। संगीत में रुचि हो सकती है। वाहनसुख की संभावना है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, धर्म में आस्था होगी। सफल होंगे, प्रसन्नचित्त रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।

- कन्याओं को खीर खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com